International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

प्लासी और बक्सर के युद्धों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Jyoti
MA in History, MDU Rohtak
Reg. No. 04-MKR-110
Email : siwacharya@gmail.com

शोध सारः प्लासी की लड़ाई एवं बक्सर की लड़ाई–अंगरेज कंपनी और आधुनिक भारत के इतिहास की ये दो राजनीतिक लड़ाइयां काफी निर्णायक रहीं। प्लासी युद्घ की तुलना में बक्सर युद्घ के परिणाम कहीं ज्यादा असरदार थे। सच कहें, तो प्लासी में अंगरेजों को अपना रण–कौशल दिखाने का मौका भी नहीं मिला। यह बक्सर की लड़ाई ही थी, जिसने अंगरेजी तरीके से प्रशिक्षित सैनिकों की श्रेष्ठता को साबित होने का पहला अवसर प्रदान किया। प्लासी युद्घ के बाद अंगरेज बंगाल में एक कठपुतली नवाब को बनाने में कामयाब हुए थे। लेकिन शीघ्र ही उन्हें मीर कासिम की चुनौती का सामना भी करना पड़ा था। किंतु बक्सर युद्घ ने अवध के नवाब एवं मुगल बादशाह को भी अंगरेजों की शरण में जाने को विवश कर दिया इस शोध–पत्र में भारत प्लासी और बक्सर के युद्धों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः आधुनिक भारत, विश्लेषणात्मक अध्ययन , युद्, प्लासी और बक्सर।

प्लासी का युद्ध 23 जून 1757 को मुर्शिदाबाद के दक्षिण में २२ मील दूर नदिया जिले में गंगा नदी के किनारे 'प्लासी' नामक स्थान में हुआ था। इस युद्ध में एक ओर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना थी तो दूसरी ओर थी बंगाल के नवाब की सेना। कंपनी की सेना नेरॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में नबाव सिराजुद्दौला को हरा दिया था। किंतु इस युद्ध को कम्पनी की जीत नही मान सकते कयोंकि युद्ध से पूर्व ही नवाब के तीन सेनानायक, उसके दरबारी, तथा राज्य के अमीर सेठ जगत सेठ आदि से कलाइव ने षडंयत्र कर लिया था। नवाब की तो पूरी सेना ने युद्ध मे भाग भी नही लिया था। युद्ध के फौरन बाद मीर जाफर के पुत्र मीरन ने नवाब की हत्या कर दी थी। युद्ध को भारत के लिए बहुत दुर्भाग्यपूर्ण माना जाता है इस युद्ध से ही भारत की दासता की कहानी शुरू होती है।

बंगाल की तत्कालीन स्थिति और अंग्रेजी स्वार्थ ने East India Company को बंगाल की राजनीति में हस्तक्षेप करने का अवसर प्रदान किया। अलीवर्दी खां, जो पहले बिहार का नायब–निजाम था, ने औरंगजेब की मृत्यु के बाद आई राजनैतिक उठा–पटक का भरपूर लाभ उठाया। उसने अपनी शक्ति बहुत बढ़ा ली। वह एक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। उसने बंगाल के तत्कालीन नवाब सरफराज खां को युद्ध में हराकर मार डाला और स्वयं नवाब बन गया। 9 अप्रैल को अलीवर्दी खां की मृत्यु हो गई। अलीवर्दी खां की अपनी कोई संतान नहीं थी इसलिए उसकी मृत्यु के बाद अगला नवाब कौन होगा, इसके लिए कुछ लोगों में उत्तराधिकार के लिए षड्यंत्र होने शुरू हो गए। पर अलीवर्दी ने अपने जीवनकाल में ही अपनी सबसे छोटी बेटी के पुत्र सिराजुद्दौला को उत्तराधिकारी मनोनीत कर दिया था। अंततः वही हुआ भी। सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना। इधर ईस्ट इंडिया कंपनी अपनी स्थिति मजबूत कर चुकी थी। दक्षिण में फ्रांसीसियों को हराकर अंग्रेजों के हौसले बुलंद थे। मगर वे बंगाल में भी अपना प्रभुत्व जमाना चाहते थे पर अलीवर्दी खां ने पहले से ही सिराजुद्दौला को सलाह दे दिया था कि किसी भी हालत में अंग्रेजों का दखल बंगाल में नहीं होना चाहिए। इसलिए सिराजुद्दौला भी अंग्रेजों को लेकर सशंकित था।

सिराजुद्दौला और अंग्रेजों के बीच संघर्ष

1. सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों को फोर्ट विलियम किले को नष्ट करने का आदेश दिया जिसको अंग्रेजों ने ठुकरा दिया. गुस्साए नवाब ने मई, 1756 में आक्रमण कर दिया। 20 जून, 1756 ई. में कासिमबाजार पर नवाब का अधिकार भी हो गया।
2. उसके बाद सिराजुद्दौला ने फोर्ट विलियम पर भी अधिकार कर लिया। अधिकार होने के पहले ही अंग्रेज गवर्नर ड्रेक ने अपनी पत्नी और बच्चों के साथ भागकर फुल्टा नामक एक द्वीप में शरण ले ली. कलकत्ता में बची–खुची अंग्रेजों की सेना को आत्मसमर्पण करना पड़ा। अनेक अंग्रेजों को बंदी बनाकर और मानिकचंद के जिम्मे कलकत्ता का भार सौंपकर नवाब अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद लौट गया।
3. ऐसी ही परिस्थिति में "काली कोठरी" की दुर्घटना (जीम ठसंबा भ्वसम ज्तंहमकल) घटी जिसने अंग्रेजों और बंगाल के नवाब के सम्बन्ध को और भी कटु बना दिए । कहा जाता है कि 146 अंग्रेजों, जिनमें उनकी स्त्रियाँ और बच्चे भी

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

थे, को फोर्ट विलियम के एक कोठरी में बंद कर दिया गया था जिसमें दम घुटने से कई लोगों की मौत हो गई थी।

4. जब इस घटना की खबर मद्रास पहुँची तो अंग्रेज बहुत गुस्से में आ गए और उन्होंने सिराजुद्दौला से बदला लेने की ठान ली। शीघ्र ही मद्रास से क्लाइव (स्वतक ब्सपअम) और वाटसन थल सेना लेकर कलकत्ता की ओर बढ़े और नवाब के अधिकारीयों को रिश्वत देकर अपने पक्ष में कर लिया। परिणामस्वरूप मानिकचंद ने बिना किसी प्रतिरोध के कलकत्ता अंग्रेजों को सौंप दी. बाद में अंग्रेजों ने हुगली पर भी अधिकार कर लिया. ऐसी स्थिति में बाध्य होकर नवाब को अंग्रेजों से समझौता करना पड़ा।

अलीनगर की संधिः 9 फरवरी, 1757 को क्लाइव ने नवाब के साथ एक संधि (अलीनगर संधि) की जिसके अनुसार मुगल सम्राट द्वारा अंग्रेजों को दी गई सारी सुविधायें वापस मिली जानी थीं. नवाब को लाचार होकर अंग्रेजों को सारी जब्त फैक्टरियाँ और संपत्तियाँ लौटाने के लिए बाध्य होना पड़ा। कम्पनी को नवाब की तरफ से हर्जाने की रकम भी मिली। नवाब अन्दर ही अन्दर बहुत अपमानित महसूस कर रहा था।

प्लासी का युद्धः अंग्रेज इस संधि से भी संतुष्ट नहीं हुए। वे सिराजुद्दौला को गद्दी से हटाकर किसी वफादार नवाब को बिठाना चाहते थे जो उनके कहे अनुसार काम करे और उनके काम में रोड़ा न डाले. क्लाइव ने नवाब के खिलाफ षड्यंत्र करना शुरू कर दिया. उसने मीरजाफर से एक गुप्त संधि की और उसे नवाब बनाने का लोभ दिया. इसके बदले में मीरजाफर ने अंग्रेजों को कासिम बाजार, ढाका और कलकत्ता की किलेबंदी करने, 1 करोड़ रुपये देने और उसकी सेना का व्यय सहन करने का आश्वासन दिया. इस षड्यंत्र में जगत सेठ, राय दुर्लभ और अमीचंद भी अंग्रेजों से जुड़ गए। अब क्लाइव ने नवाब पर अलीनगर की संधि भंग करने का आरोप लगाया. इस समय नवाब की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। दरबारी–षड्यंत्र और अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण से उत्पन्न खतरे की स्थिति ने उसे और भी भयभीत कर दिया. उसने मीरजाफर को अपनी तरफ करने की कोशिश भी की पर असफल रहा. नवाब की कमजोरी को भाँपकर क्लाइव ने सेना के साथ प्रस्थान किया. नवाब भी राजधानी छोड़कर आगे बढ़ा. 23 जून, 1757 को प्लासी के मैदान में दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई. यह युद्ध नाममात्र का युद्ध था। नवाब की सेना के एक बड़े भाग ने युद्ध में हिस्सा नहीं लिया। आंतरिक कमजोरी के बावजूद सिराजुद्दौला की सेना, जिसका नेतृत्व मीरमदन और मोहनलाल कर रहे थे, ने अंग्रेजों की सेना का डट कर सामना किया। परन्तु मीरजाफर के विश्वासघात के कारण सिराजुद्दौला को हारना पड़ा। वह जान बचाकर भागा, परन्तु मीरजाफर के पुत्र मीरन ने उसे पकड़वा कर मार डाला।

युद्ध के कारण

आंतरिक संघर्षः– गद्दी पर बैठते ही सिराजुद्दौला को शौकतगंज के संघर्ष का सामना करना पड़ा क्योंकि शौकतगंज नवाब बनना चाहता था। इसमें छसीटी बेगम तथा उसके दिवान राजवल्लाव और मुगल सम्राट का समर्थन उसे प्राप्त था इस लिए सिराजुद्दौला ने सबसे पहले उस आन्तरिक संघर्ष को सुलझाने का प्रयास किया। क्योंकि इसी के चलते बंगाल की राजनीति में अंग्रेजों का हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा था नवाब ने शौकतगंज की हत्या कर दी। और इसके पश्चात उसने अंग्रेजों से मुकाबला करने का निश्चय किया।

अंग्रेज द्वारा नवाब के विरुद्ध षडयंत्रः– प्रारंभ से ही अंग्रेजों की आखें बंगाल पर लगी हुई थी। क्योंकि बंगाल एक उपजाऊ और धनी प्रांत था। अगर बंगाल पर कम्पनी का अधिकार हो जाता तो उसे अधिक से अधिक धन कमाने की आशा थी। इतना ही नहीं वे हिन्दु व्यापारियों को अपनी ओर मिलाकर उन्हें नवाब के विरुद्ध भड़काना शुरु किया नवाब इसे पसन्द नहीं करता था।

व्यापारिक सुविधाओं का उपयोगः– मुगल सम्राट के द्वारा अंग्रेजों को निशुल्क सामुद्रिक व्यापार करने की छूट मिलि थी लेकिन अंग्रेजों ने इसका दुरुपयोग करना शुरु किया। वे अपना व्यक्तिगत व्यापार भी निःशुल्क करने लगे और देशी व्यापारियों को बिना चुंगी दिए व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित करने लगे। इससे नवाब को आर्थीक क्षति पहुँचती थी। नवाब इन्हें पसन्द नहीं करता था जब, उन्होने व्यापारिक सुविधाओं के दुरुपयोग को बन्द करने का निश्चय किया तो अंग्रेज संघर्ष पर उतर आए।

अंग्रेजों द्वारा किले बन्दीः– इस समय यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध छिड़ने की आशंका थी। जिसमें इंगलैण्ड और फ्रांस एक दूसरे के विरुद्ध लड़ने वाले थे अतः दूसरे देश में भी जो अंग्रेज और फ्रांसीसी थे। उन्हे युद्ध की आशंका थी। इसलिए अपनी– 2 स्थिति को मजबूत करने के लिए उन्होनें किलेबन्दी करना शुरु किया। नवाब इसे बर्दास्त नहीं कर सकता था।

अंग्रेज द्वारा सिराजुद्दौला को नवाब की मान्यता नहीं देनाः– बंगाल की प्राचीन परम्परा के अनुसार अगर कोई नया नवाब गद्दी पर बैठता था तो उस दिन दरवार लगती थी। और उसके अधीन निवास करने वाले राजाओं, अमीरों या विदेशी जातियों के प्रतिनिधियों को दरबार में उपस्थित हो कर उपहार भेट करना पड़ता था। कि वे नये नवाब को स्वीकार करते हैं। परन्तु सिराजुद्दौला के राज्यभिषेक के अवसर पर अंग्रेजों का कोई प्रतिनिधि दरबार में हाजिर नहीं हुआ। क्योंकि वे सिराजुद्दौला को नवाब नहीं मानते थे इसके चलते भी दोनों के बीच संघर्ष की संम्भावना बढ़ती गई। अंग्रेज सिराजुद्दौला को हटा कर किसी ऐसे व्यक्ति को नवाब बनाना चाहते थे जो उसके इशारे पर चलने के लिए तैयार हो इसके लिए अंग्रेजों ने प्रयास करना शुरु किया। ऐसी परिस्थिति में संघर्ष टाला नहीं जा सकता था।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

कलकत्ता पर आक्रमणः जब नवाब ने किले बंदी करने को रोकने का आदेश जारी किया तो अंग्रेजों ने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया वो किले का निर्माण करते रहे। इसपर नवाब क्रोधित हो उठा और 4 जुन 1756 को कासिमबाजार की कोठी पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेज सैनिक इस आक्रमण से घबड़ा गए और अंग्रेजों की पराजय हुई और कासिम बाजार पर नवाब का अधिकार हो गया। इसके बाद नवाब ने शिघ्र ही कलकत्ता के फोर्ट विलिय पर आक्रमण किया यहाँ अंग्रेज सैनिक भी नवाब के समक्ष टीक नहीं पाया और इसपर भी नवाब का अधिकार हो गया। इस युद्ध में काफी अंग्रेज सैनिक गिरफ्तार किये गये।

काली कोठरी की दुर्घटनाः– उपर्युक्त लड़ाई में नवाब ने 146 अंग्रेज सैनिकों को कैद कर लिया तो उसे एक छोटी सी अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया इसकी लम्बाई 18 फिट और चौड़ाई 14–10 फिट थी। यह अंग्रेजों के द्वारा बनाया गया था और इसमें भारतीय अपराधियों को बन्द किया जाता था। चुँकि गर्मी का दिन था और युद्ध के परिम थे 123 सैनिकों की मृत्यु दम घुटने के कारण हो गई और 23 सैनिक बचे जिसमें हाँवेल एक अंग्रेज सैनिक भी था। उसी के इस घटना की जानकारी मद्रास के अंग्रेजों को दी। इसी दुर्घटना को काली कोठरी की दुर्घटना के नाम से जाना जाता है। इसके चलते अंग्रेजों का क्रोध भड़क उठा और वे नवाब से युद्ध की तैयारी करने लगे।

अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता पर पुनः अधिकारः– अपनी पराजय का बदला लेने के लिए अंग्रेज ने शीघ्र ही कलकत्ता पर आक्रमण कर दिया। इस समय नवाब ने मानिकचन्द को कलकत्ता का राजा नियुक्त किया था। लेकिन वह अंग्रेजों का मित्र और शुभचिन्तक था। फलतः अंग्रेजों की विजय हुई कलकत्ता नवाब के चंगुल से मुक्त हो गया। 9 फरवरी 1757 को दोनों के बीच अली नगर की संधि हुई और अंग्रेजों को फिर से सभी तरह के व्यवहारिक अधिकार उपलब्ध हो गया।

फ्रांसीसीयों पर अंग्रेजों का आक्रमणः–

अंग्रेजों ने फ्रांसीसीयों की वस्ती चन्द नगर पर आक्रमण कर दिया। और उसे अपने अधिन कर लिया। फ्रांसिसी नवाब के मित्र थे इसलिए नवाब इस घटना से काफी क्षुब्ध थे।

मीरजाफर के साथ गुप्त संधि इसी समय अंग्रेजों ने नवाब को पदच्युत करने के लिए एक षडयंत्र रचा। इसमें नवाब के भी कई लोग शामिल थे। जैसे– रायदुर्लभ प्रधान सेनापति मीरजाफर और धनी व्यापाकिर जगत सेवक आदि। अंग्रेजों ने मीरजाफर को बंगाल का नवाब बनाने का प्रलोभन दिया और इसके साथ गुप्त संधि की इस संधि के पश्चात नवाब पर यह आरोप लगाया गया कि उन्होने अली नगर की संधि का उलंघन किया है और उसी का बहाना बनाकर अंग्रेज ने नवाब पर 22 जुन 1757 को आक्रमण कर दिया। प्लासी युद्ध के मैदान में घमासान युद्ध प्रारंभ हुआ मीरजाफर तो पहले ही अंग्रेजों से संधि कर चुका था फलतः नवाब की जबरदस्त पराजय हुई। अंग्रेजों की विजय हुई। नवाब की हत्या कर दी गई और मीरजाफर को बंगाल का नवाब बनाया गया।

युद्ध के परिणामः

प्लासी के युद्ध के परिणाम अत्यंत ही व्यापक और स्थायी निकले. इसका प्रभाव कम्पनी, बंगाल और भारतीय इतिहास पर पड़ा। प्लासी युद्ध के द्वारा बंगाल में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डाली गई। अंग्रेजों को नवाब बनाया गया। प्लासी का युद्ध वास्तव में कोई युद्ध नहीं था यह एक षडयंत्र और विश्वासघाति का प्रदर्शन था प्रसिद्ध इतिहासकार 'पानीवकर' के अनुसार प्लासी का युद्ध नहीं, परन्तु इसका परिणाम काफी महत्वपूर्ण निकला। इसलिए इसे विश्व के निर्णायक युद्धों में स्थान उपलब्ध है। क्योंकि इसी के द्वारा बंगाल में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डाली गई। क्लाइव ने इस युद्ध को क्रांति की संज्ञा दी है। वास्तव में यह एक क्रांति थी क्योंकि इसके द्वारा भारतीय इतिहास की धारा में महान परिवर्तन आ गया और एक व्यापारिक संस्था ने बंगाल की राजनितिक बागडोर अपने हाथों में ले ली। इसके विभिन्न तरह के परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं।

राजनीतिक परिणामः–

इसके राजनीतिक परिणाम भारत के लिए घातक सिद्ध हुआ। इसके द्वारा एक व्यापारिक संस्था के हाथों में राजनीतिक अधिकारों का समावेश हुआ और भारत में अंग्रेजी सत्ता कायम हुआ। वस्तुतः यह ब्रिटिश राष्ट्र के लिए अत्यधिक महत्व था इस युद्ध के पश्चात मीरजाफर को बंगाल का नवाब बनाया गया। परन्तु यह क अयोग्य व्यक्ति था। इसके अयोग्यता काफायता उठाते हुए बंगाल का वास्तविक शासक अंग्रेज बन गए। बंगाल पर अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ता गया और धीरे– 2 ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार का मार्ग साफ होता गया। सिराजुद्दौला के हटने से अंग्रेजों को राजनीतिक प्रभुत्व बढाने का फायदा मिला। मुगल साम्राज्य के लिए बी प्लासी का परिणाम घातक सिद्ध हुआ बंगाल से प्रतिवर्ष मुगल शासक को अच्छी आमदनी होती थी लेकिन अब यह आमदनी समाप्त हो गई। अंग्रेजों को भारतीय नरेशों को कमजोरी की जानकारी मिल गई। भविष्य में उसने उसका काफी फायदा उठाया और उत्तरी भारत की विजय का मार्ग प्रशस्त हुआ।

आर्थिक परिणामः– इस युद्ध के द्वारा अंग्रेजों को काफी आर्थीक लाभ पहुँचा मीरजाफर ने कम्पनी को 1 करोड़ 17 लाख रुपये दिये जिससे कम्पनी की आर्थीक स्थिति काफी मजबूत हो गई बंगाल की लुट से बी उसे काफी धन हाथ लगा। कम्पनी के मठ कर्मचारीयों को साढ़े 12 लाख रुपए मिले। क्लाइव को दो लाख 24 हजार रुपए मिले। इस युद्ध के पश्चात कम्पनी धीरे– 2 जागीदार बाद में बंगाल की दीवान बन गई। इस प्रकार इसके द्वारा भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डाली गई। अंग्रेजों को पुनः व्यापार करने का अधिकार मिला मीरजाफर ने कम्पनी को घुस के रूप में 3 करोड़ रुपए प्रदान किए तथा व्यापार से भी अंग्रेजों ने 15 करोड़ का मुनाफा कमाया।

बक्सर का युद्ध

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

बक्सर का युद्ध २२ अक्टूबर १७६४ में बक्सर नगर के आसपास ईस्ट इंडिया कंपनी के हैक्टर मुनरो और मुगल तथा नबाबों की सेनाओं के बीच लड़ा गया था। बंगाल के नबाब मीर कासिम, अवध के नबाब शुजाउद्दौला, तथा मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना अंग्रेज कंपनी से लड़ रही थी। लड़ाई में अंग्रेजों की जीत हुई और इसके परिणामस्वरूप पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, उड़ीसा औरबांग्लादेश का दीवानी और राजस्व अधिकार अंग्रेज कंपनी के हाथ चला गया। प्लासी के युद्ध के बाद सतारुढ़ हुआ मीर जाफर अपनी रक्षा तथा पद हेतु ईस्ट इंडिया कंपनी पर निर्भर था। जब तक वो कम्पनी का लोभ पूरा करता रहा तब तक पद पर भी बना रहा। उसने खुले हाथो से धन लुटाया, किंतु प्रशाशन सम्भाल नही सका, सेना के खर्च, जमींदारों की बगावातो से स्थिति बिगड़ रही थी, लगान वसूली मे गिरावट आ गई थी, कम्पनी के कर्मचारी दस्तक का जम कर दुरूपयोग करने लगे थे वो इसे कुछ रुपयों के लिए बेच देते थे इस से चुंगी बिक्री कर की आमद जाती रही थी बंगाल का खजाना खाली होता जा रहा था।

हाल्वेल ने माना की सारी समस्या की जड़ मीर जाफर है। उसी काल में जाफर का बेटा मीरन मर गया जिस से कम्पनी को अवसर मिल गया था और उसने मीर कासिम जो जाफर का दामाद था, को सत्ता दिलवा दी। इस हेतु 27 सितंबर 1760 एक संधि भी हुई जिसमे कासिम ने 5 लाख रूपये तथाबर्दवान, मिदनापुर, चटगांव के जिले भी कम्पनी को दे दिए। इसके बाद धमकी मात्र से जाफर को सत्ता से हटा दिया गया और मीर कासिम सत्ता मे आ गया। इस घटना को ही 1760 की क्रांति कहते है। बक्सर का युद्ध 1763 ई. से ही आरम्भ हो चुका था, किन्तु मुख्य रूप से यह युद्ध 22 अक्तूबर, सन् 1764 ई. में लड़ा गया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा बंगाल के नवाब मीर कासिम के मध्य कई झड़पें हुईं, जिनमें मीर कासिम पराजित हुआ। फलस्वरूप वह भागकर अवध आ गया और शरण ली। मीर कासिम ने यहाँ के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय के सहयोग से अंग्रेजों को बंगाल से बाहर निकालने की योजना बनायी, किन्तु वह इस कार्य में सफल नहीं हो सका। इस युद्ध में एक ओर मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय, अवध का नवाब शुजाउद्दौला तथा मीर कासिम थे, दूसरी ओर अंग्रेजी सेना का नेतृत्व उनका कुशल सेनापति 'कैप्टन मुनरो' कर रहा था। दोनों सेनायें बिहार मेंबलिया से लगभग 40 किमी. दूर 'बक्सर' नामक स्थान पर आमने–सामने आ पहुँचीं। 22 अक्टूबर, 1764 को 'बक्सर का युद्ध' प्रारम्भ हुआ, किन्तु युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही अंग्रेजों ने अवध के नवाब की सेना से 'असद खाँ', 'साहूमल' (रोहतास का सूबेदार) और जैनुल अबादीन को धन का लालच देकर अलग कर दिया। लगभग तीन घन्टे में ही युद्ध का निर्णय हो गया, जिसकी बाजी अंग्रेजों के हाथ में रही। शाह आलम द्वितीय तुरंत अंग्रेजी दल से जा मिला और अंग्रेजों के साथ सन्धि कर ली। ऐसा माना जाता है कि, बक्सर के युद्ध का सैनिक एवं राजनीतिक महत्व प्लासी के युद्ध से अधिक है। मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय, बंगाल का नवाब मीर कासिम एवं अवध का नवाब शुजाउद्दौला, तीनों अब पूर्ण रूप से कठपुतली शासक हो गये थे। उन्हें अंग्रेजी सेना के समक्ष अपने बौनेपन का अहसास हो गया था। थोड़ा बहुत विरोध का स्वर मराठों और सिक्खों मे सुनाई दिया, किन्तु वह भी समाप्त हो गया। निःसन्देह इस युद्ध ने भारतीयों की हथेली पर दासता शब्द लिख दिया, जिसे स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद ही मिटाया जा सका। मीर कासिम को नवाब के पद से हटाकर एक बार पुनः मीर जाफर को अंग्रेजों ने बंगाल का नवाब बनाया। 5 फरवरी, 1765 ई. को मीर जाफर की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद कम्पनी ने उसके अयोग्य पुत्र नजमुद्दौला को बंगाल का नवाब बनाकर फरवरी, 1765 ई. में उससे एक सन्धि कर ली। सन्धि की शर्तों के अनुसार रक्षा व्यवस्था, सेना, वित्तीय मामले, वाह्य सम्बन्धों पर नियंत्रण आदि को अंग्रेजों अपने अधिकार में कर लिया तथा बदले में नवाब को 53 लाख रुपये वार्षिक पेंशन देने का वादा किया।

परिणाम

भारत के निर्णायक युद्धों में बक्सर के युद्ध का परिणाम अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है. बक्सर का युद्ध बंगाल में तीसरी क्रांति का प्रतीक था. पहली क्रान्ति प्लासी के युद्ध से शुरू हुई और 1760 ई. में मीरजाफर को हटाकार मीरकासिम को नवाब बनाने के साथ दूसरी क्रान्ति पूरी हुई. अंग्रेजों द्वारा बंगाल में जो नाटक खेला जा रहा था उसके तीसरे और अंतिम दृश्य का पटाक्षेप बक्सर के युद्ध के रूप में हुआ.

- बंगाल पर अंग्रेजों का वास्तविक रूप से अधिकार हो गया और उत्तर भारत का राजनीति पर उनका प्रभाव बढ़ गया.
- बक्सर के युद्ध में अवध के नवाब शुजाउद्दौला की पराजय से उत्तर भारत में कोई दूसरी शक्ति नहीं रही जो अंग्रेजों का विरोध कर सकती थी
- शुजाउद्दौला ने अंग्रेजों के साथ मित्रता कर ली और दिल्ली का सम्राट शाहआलाम बंगाल के नवाब की तरह अंग्रेजों की सैनिक सहायता पर निर्भर रहने लगा
- शाहआलम अंग्रेजों का वास्तविक अधिकार बंगाल और बिहार में स्वीकार करने को तैयार था. मुगल सम्राट नाममात्र का अपना अधिकार सुरक्षित रखकर अंग्रेजों से किसी प्रकार समझौता करना चाहता था.
- बंगाल के नवाब के अधिकार को खत्म कर दिया गया. बंगाल के नवाब को सीमित संख्या में सेना रखने की इजाजत दी गई ताकि भविष्य में वह मीरकासिम की तरह अंग्रेजों का विरोध न कर सके.
- बंगाल के नवाब के यहाँ एक अंग्रेज प्रतिनिधि रहने लगा ताकि अंग्रेजों के खिलाफ कोई षड्यंत्र न रचा जाए
- बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों को जितनी हानि उठानी पड़ी उसकी क्षतिपूर्ति मीरजाफर को करनी पड़ी.

इस प्रकार बंगाल का नवाब मीरजाफर, अवध का नवाब शुजाउद्दौला और दिल्ली सम्राट शाहआलम तीनों अंग्रेजों की दया पर निर्भर थे. स्वाभविक रूप से बक्सर के युद्ध के बाद भारतीय राजनीति में अंग्रेजों के प्रभुत्व और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई. बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिल जाने से अंग्रेजों की माली हालत अच्छी हो गई. उत्तर भारत में सत्ता–विस्तार का द्वार खुल गया. मराठों के साथ संघर्ष करने के लिए अंग्रेज तत्पर हो गए और अंत में भारत–विजय करने में वे सफल रहे. परिणाम बेहद महत्वपूर्ण निकले। सहज ही प्रयास से पूरा अवध कम्पनी को मिल गया था। नवाब शुजाउदौला की हालत इतनी गिर गई की उसने कम्पनी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था (मई १७६५)। शाह आलम भी कम्पनी की शरण में आ गया था। बंगाल अब कम्पनी का अधीनस्थ राज्य बन गया। अवध उस पर आश्रित तथा मुगल सम्राट कम्पनी का पेंशन भोगी। ये सभी कार्य इलाहाबाद की संधि (१६ अगस्त १७६५) से हुआ इस के बाद बंगाल, बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड की दीवानी कम्पनी को मिल गई थी। बंगाल में द्वैध शासन शुरू हो गया।

प्लासी और बक्सर युद्ध की तुलना

बंगाल पर राजनीतिक नियंत्रण के क्रम में कंपनी को प्लासी एवं बक्सर के दो युद्धों का सामना करना पड़ा। वस्तुतः पूरे भारत में अंग्रेजी सम्राज्यवाद की स्थापना की दृष्टिकोण से दोनों युद्ध निर्णायक माने जाते है। जहाँ प्लासी के युद्ध ने ब्रिटिश कंपनी के विस्तार हेतु आवश्यक पृष्टभूमि तैयार किया वही बक्सर युद्ध ने कंपनी को भारतीय साम्राज्य का प्रधान दावेदार बना दिया। इस प्रकार दोनों युद्धों का ब्रिटिश सम्राज्यवाद के लिए महत्वपूर्ण स्थान है। लेकिन दोनों युद्धों की तुलना भी की जाती है ।

सैनिक दृष्टि से प्लासी की लड़ाई मात्र एक झड़प थी। यह एक षड्यंत्र का परिणाम था। जिसमे मीरजाफर ने नवाब को अंग्रेजों के हाथों बेच डाला था। लेकिन बक्सर का युद्ध सैनिक दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण था। इस युद्ध में अंग्रेजों ने मीरकासिम, शुजाउद्दौला एवं शाह आलम के संयुक्त गठबंधन को पराजित किया था। इस युद्ध से यह स्पष्ट हो गया की आधुनिक सुसंगठित सेना एक अखंडित सेना को पराजित कर सकती है ।

प्लासी युद्ध का क्षेत्र एवं उद्धेश्य भी सीमित था। इसका एक मात्र उद्धेश्य कठपुतली नवाब को गद्दी पर बैठाना था। लेकिन बक्सर युद्ध का उद्धेश्य कही बड़ा था। इसका उद्धेश्य किसी भी प्रकार से एक शक्तिशाली नवाब की समस्त संभावना को समाप्त करना था ।

राजनीतिक दृष्टिकोण से प्लासी का युद्ध महत्वपूर्ण है। बंगाल पर नियंत्रण की शुरुआत यहीं से होती है, लेकिन बक्सर का युद्ध अधिक महत्वपूर्ण है। प्लासी युद्ध से बंगाल पर पूर्ण नियंत्रण नही हुआ था। अभी भी कोई योग्य शासक अंग्रेजों को चुनौती दे सकता था । जैसा की मीर कासिम ने किया नवाब और कंपनी के बीच सर्वोच्चता का समाधान नही किया गया था । लेकिन बक्सर युद्ध से यह समाधान हो गया और कंपनी सर्वोच्च हो गई। बंगाल पर योग्य नवाब की उभरने की संभावना समाप्त हो गई । बंगाल पर कंपनी को निजामत एवं दीवानी दोनो अधिकार प्राप्त हो गये। इसके अलावा अवध के नवाब अंग्रेजों के नियंत्रण में आ गया । इलाहाबाद तक का प्रदेश अंग्रेजों के चरणों में आ गया और अब कंपनी दिल्ली कर दस्तक देने की स्थिति में आ गई ।

आर्थिक दृष्टि से प्लासी का युद्ध महत्वपूर्ण साबित हुआ। कंपनी को कीमती धातुओं के आयात से मुक्ति मिली। कंपनी के अधिकारियों को बेपनाह दौलत का स्रोंत मिल गया। लेकिन बक्सर का युद्ध आर्थिक दृष्टिकोण से और अधिक महत्वपूर्ण साबित हुआ । द्वौत शासन के जरिये शोषण का एक नया युग समाप्त हुआ। कंपनी अब बंगाल से मिलने वाले भू–स्वराज को माल खरीदने में निवेश करने लगे । इस प्रकार संगठित धन निर्गमन शुरु हुआ।

निष्कर्ष

ब्रिटिश समाजवाद के लिए दोनो युद्धों का महत्व है। लेकिन तुलनात्मक रुप से बक्सर का युद्ध अधिक निर्णायक है। जी. बी. महेसन ने अपनी पुस्तक Decisive Battels of India में बक्सर युद्ध को सबसे अधिक निर्णायक माना है। लेकिन यह तथ्य उल्लेखनीय है कि दोनो युद्ध वस्तुतः एक ही सम्राज्यवाद के अंग थे। प्लासी युद्ध उपर्युक्त वातावरण का श्रीजन किया और बक्सर युद्ध ने सभी समस्याओं को सुलझाते हुए, प्लासी के अधूरे कार्य को पूर्ण किया । दोनों का सम्मिलित परिणाम था पहले बंगाल में एवं बाद में भारत में अंग्रेजी सम्राज्यवाद की स्थापना और नवीनचन्द्र सेन के शब्दों में भारत में अंधकारमयी दास्ता की शुरुआत ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- चौधरी, एस. दि प्रिल्यूड टु एंपायरय पलाशी रिवॉल्यूशन ऑफ १७५७,, नई दिल्ली, २०००.
- परषोत्तम मेहरा (१६८५). आधुनिक इतिहास का शब्दकोश (१७०७–१६४७)
- Paul K. Davis (1999). 100 Decisive Battles: From Ancient Times to the Present, p. 240-244. Santa Barbara, California.
- Datta, K.K. Siraj-ud-daulah,, Calcutta, 1971

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

क Harrington, Peter. Plassey 1757, Clive of India's Finest Hour, Osprey Campaign Series 35, Osprey Publishing, 1994

क Paul K. Davis (1999). 100 Decisive Battles: From Ancient Times to the Present, p. 240-244. Santa Barbara, California.

क Datta, K.K. Siraj-ud-daulah,, Calcutta, 1971